International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 519-520

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 519-520
www.allresearchjournal.com
Received: 26-11-2017
Accepted: 28-12-2017

डॉ० कृतार्थ शंकर पाठक
हिंदी अध्यापक, ज. न. वि.
सीतामढ़ी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० कृतार्थ शंकर पाठक
हिंदी अध्यापक, ज. न. वि.
सीतामढ़ी, बिहार, भारत

'गोदान' की झुनिया – एक मूल्यांकन

डॉ० कृतार्थ शंकर पाठक

सारांश
विश्व–साहित्य की चर्चित कृतियों में 'गोदान' आदर के साथ स्मरण किया जाता है। यह कलम के सिपाही प्रेमचंद का कालजयी उपन्यास है। इसे हिंदी साहित्य में, किसान जीवन का महाकाव्य कहने में, कई समीक्षक गौरव की अनुभूति करते हैं। [1] इसी उपन्यास का एक नारी पात्र है– झुनिया/नारी स्वातंत्र्य युग में, नारियों के जीवन दिशा और दशाओं को झुनिया प्रभावित करती है। [2] प्रस्तुत शोध आलेख में, इसी तथ्य को प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तावना
झुनिया 'गोदान' में कहीं प्रमुख पात्र के रूप में नहीं आती है। [3] उपन्यासकार ने तीसरे परिच्छेद में ही उसका आगमन करा दिया है और उपन्यास में वह समय–समय पर प्रकट होती रहती है। यह भी कहा जा सकता हे कि उपन्यास के नायक होरी के जीवन में वह विपदा बन कर प्रकट होती है। झुनिया के प्रेम के कारण ही होरी का बेटा गोबर घर से भागा है। झुनिया के आने के बाद ही होरी डॉर चुकाता है और घर को गिरबी रखता है। झुनिया को गोबर लखनऊ ले जाकर अपने माँ–बाप को भूल जाता है। इस प्रसंग में होरी आर्थिक रूप से चरमराता तो है ही, साथ ही साथ मानसिक रूप से भी वह टूट जाता है।
उपन्यासकार ने झुनिया का चित्र सर्वप्रथम एक उदार ह्रदय और भावुक मानसिकता के रूप में उभारा है। गोबर, होरी और भोला भूसा लेकर आता है, तो वह कलसा लेकर कुएँ पर जाती है और साथ में गोबर भी है। यह प्रसंग देखिए– ''कुएँ के जगत पर जाकर मुस्कुराती हुई बोली–तुम हमारे मेहमान हो, कहोगे एक लोटा पानी भी किसी ने न दिया। 'मेहमान काहे से हो गया। तुम्हारा पड़ोसी ही तो हूँ।' 'पड़ोसी साल भर में एक बार भी सूरत न दिखाए, तो मेहमान ही है। 'रोज–रोज आने से मरदाज भी तो नहीं रहती हैं।' झुनिया हँसकर तिरछी नजरों से देखती हुई बोली–''वही मरजाद तो दे रही हूँ। महीने में एक बार आओगे, ठण्डा पानी दूँगी। पन्द्रहवें दिन आओगे, चिलम पाओगे। सातवें दिन आआगे, खाली बैठने को माची पाओगे। रोज–रोज आआगे, कुछ नहीं पाओगे।'' [4]
झुनिया विधवा है और युवती भी। प्रेमचंद ने लिखा है कि 'उसके माँसल, स्वस्थ, सुगठित अंगों में मानो यौवन लहरें मार रहा था। मुँह बड़ा और गोल था। कपोल फूले हुए, आँखें छोटी और भीतर धँसी हुई, माथा पतला, पर वक्ष का उभार और गाल का गुदगुदापन, आँखों को खींचता था। उसपर छपी हुई गुलाबी साड़ी, उसे और भी शोभा प्रदान कर रही थी।'' [5]
जिस झुनिया के संबंध में उसका पिता कहता है कि यह वैसी ही लड़की है, जो छोटा काम भी करती है, तो भुन–भुनाकर–वह झुनिया, गोबर जैसे युवक को देखकर उत्साह से मगन हो जाती है। वह जानती है कि मेहमान को एक लोटा पानी दे देना ही काफी है, पर गोबर को इसका आभास दिलाकर गुदगुदा देती है और प्रेम की चुटकी भी काटती है। वह अपने मन की लालसा को गोबर के सामने तरह–तरह से रखती है और गोबर, जो इस रास्ते से अनभिज्ञ है, उसे सहज रूप में फँसा लेती है।
झुनिया का प्रेम गोबर के साथ तब प्रगाढ़ होता है, जब गोबर गाय लेने उसके यहाँ आता है। वह गोबर से कहती है– 'तुम्हारे पास कुछ नहीं है, मैं तो समझती हूँ मेरे लिए तुम्हारे पास जो कुछ है, वह बड़े–बड़े लखपतियों के पास नहीं है। तुम मुझसे भीख न माँग कर मुझे मोल ले सकते हो।... जानते हो, दाम क्या देना होगा? मेरा होकर रहना पड़ेगा। फिर किसी के सामने हाथ फैलाये देखूँगी, तो घर से निकाल दूँगी।'' [6]
झुनिया समय को पहचानती है। वह गर्म लोहे पर चोट करना जानती है। उसे पता है कि कब कौन–सी बात कही जाय और किस प्रकार कही जाय। गोबर को अपने सीधेपन की कथा सुनाकर पूर्णत– संतुष्ट हो जाना चाहती है कि गोबर उसके मार्ग का साथी बन सकता है कि नहीं। वह कहती– ''एक से एक बाबू, महाजन, ठाकुर वकील, अमले, अफसर अपना रसियापन दिखाकर

मुझे फँसा लेना चाहते हैं। कोई छाती पर हाथ रखकर कहता है, झुनिया। तरसा मत। कोई मुझे रसीली, नशीली, चितवन से घूरता है, मानो मारे प्रेम के बेहोश हो गया है, कोई रूपया दिखाता है, कोई गहने। सब मेरी गुलामी करने को तैयार रहते हैं, उमिर भर, बल्कि अगले जन्म में भी, लेकिन मैं उन सबों की नस पहचानती हूँ। सब के सब भौंरे रस लेकर उड़ जाने वाले हैं। मैं भी उन्हें ललचाती हूँ, तिरछी नजरों से देखती हूँ, मुस्कुराती हूँ। वह मुझे गधी बनाते हैं, मैं उन्हें उल्लू बनती हूँ'' [7]

गोबर झुनिया को अपना लेने का संकल्प करता है। झुनिया के लिए वह अपना जान लेने के लिए तैयार है। झुनिया की नजरों में मर्दो का जान देना कुछ दूसरा अर्थ रखता है। अतः वह गोबर को 'जान देने' का अर्थ बतलाते हुए कहती है– 'जाने देने का अर्थ है, साथ रहकर निबाह करना। एक बार हाथ पकड़कर उमिर भर, निबाह करते रहना, चाहे दुनिया कुछ भी कहे, चाहे माँ–बाप, भाई–बन्धु, घर–द्वार सब कुछ छोड़ना पड़े। मुँह से जान देनेवाले बहुत को देख चुकी। भौंरों की भाँति फूल का रस लेकर उड़ जाते हैं। तुम भी वैसे ही तो न उड़ जाओगे?'' [8]

झुनिया पुरुषों की मनोवृत्तियों को भली–भाँति जानती है। पुरूषों को रिझाकर कुछ ऐंठना भी उसने सीख लिया है। जब मातादीन से झुनिया का सम्पर्क होता है, तो सोना उसका विरोध करती है। उस समय भी झुनिया पुरुषों की मनोवृत्तियों को स्पष्ट करते हुए कहती है– '' सिवाय मीठी–मीठी बातों के वह झुनिया से कुछ नहीं पा सकते और मीठी बातों को महगे दामों में बेचना भी मुझे आता है। मैं ऐसी अनाड़ी नहीं हूँ कि किसी की बातों में आ जाऊँ।'' [9]

कुएँ पर हास–विलास करनेवाली झुनिया का वह रूप धनिया के घर आ जाने के बाद बदल जाता है। अब वह एक गर्भवती पुत्रवधू है। जब गोबर उसे अपने घर पहुँचाकर लखनऊँ भाग जाता है, तो उस विषम परिस्थिति में अपने को सम्हालना जानती है। उग्र धनिया को अपने करुण वचनों से शांत कर देती है– ''झुनिया सान्त्वना पाकर और भी होरी के पैरों से चिपट गई और बोली–दादा अब तुम्हीं मेरे बाप हो, और अम्मा, तुम्हीं मेरी माँ। मैं अनाथ हूँ। मुझे सरन दो। नहीं तो मेरे काका और भाई मुझे कच्चा ही खा जायेंगे।'' [10]

झुनिया का उग्र रूप उपन्यास में तब उभरता है, जब उसे घर से निकलवाने के लिए उसका बाप भोला, होरी के सामने शर्त रखता है कि या तो झुनिया को घर से निकाल दो या हम बैल खोलकर ले जायेंगे, तब वह अपने बच्चे को गोद में लेकर बाहर आती है और कहती है, ''काका, लो मैं इस घर से निकल जाती हूँ और जैसी तुम्हारी मनोकामना है, उसी तरह भीख माँग कर अपना और बच्चे का पेट पालूँगी और जब भीख भी न मिलेंगे, तो कहीं डूब मरूँगी।... झुनिया ने उसकी ओर ताका भी नहीं। उसमें वह क्रोध था, जो अपने को खा जाना चाहता है, जिसमें हिंसा नहीं आत्म समर्पण है। धरती उस वक्त मुँह खोलकर उसे निगल लेती, तो वह कितना धन्य मानती। उसने आगे कदम उठाया।'' [11]

झुनिया धनिया के सामने समर्पित है। उसने धनिया से जो पाया है, वह अपनी माँ से भी नहीं पाया था– ''झुनिया रोती हुई बोली–अम्मा जब अपना बाप होकर मुझे धिक्कार रहा है, तो मुझे डूब ही जाने दो। मुझ अभागिनी के कारण तो तुम्हें दुःख ही मिला। जब से आयी, तुम्हारा घर मिट्टी में मिल गया। तुमने इतने दिन जिस परेम से रक्खा, माँ भी न रखती। भगवान मुझे फिर जन्म दें, तो तुम्हारी कोख से दे, यही मेरी अभिलाषा है।'' [12]

इसका मतलब यह नहीं है कि वह सब दिन धनिया का बनकर रह जाना चाहती है और धनिया के सामने मुँह नहीं खोलती। वह उग्रता में धनिया को भी नहीं बकसती है– '' झुनिया भी कोठरी से निकल कर बोली... अम्मा, जुलाहे का गुस्सा डाढ़ी पर न उतारो। कोई बच्चा नहीं है कि उन्हें फोड़ लूँगी। अपना–अपना भला बुरा सब समझते हैं। आदमी इसीलिए नहीं जन्म लेता कि सारी उम्र तपस्या करता रहे और एक दिन खाली हाथ मर जाए। सबकी लालसा होती है कि हाथ में चार पैसे हों।'' [13]

उपन्यास में झुनिया का मानिनी रूप भी पाठकों के सामने आता है। गोबर साल भर बाद लखनऊ से लौटता है। झुनिया रूठी हुई है और मान–मनोव्वल के बाद गोबर को उलाहना देते हुए कहती है– ''मुझे लाकर यहाँ बिठा दिया। आप परदेश की राह ली। फिर खोज न खबर कि मरती है या जीती है। सालभर के बाद, अब आकर तुम्हारी नींद टूटी है। कितने बड़े कपटी हो तुम। मैं तो सोचती थी कि तुम मेरे पीछे–पीछे आ रहे हो और आप उड़े तो साल के बाद लौटे। मर्दो का विश्वास ही क्या? कहीं कोई और ताक ली होगी। सोचा होगा, एक घर के लिए है ही, एक बाहर के लिए भी हो जाय।'' [14]

प्रेमचंद जी ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि झुनिया केवल मानिनी ही नहीं है वरन् उसे पत्नी का धर्म भी पता है। जब गोबर लखनऊ में संघर्ष में घायल होता है, तो वह श्रम करके कुछ कमा लेती है और प्रसन्नता के साथ गृहस्थी की चक्की चलाने लगती है– ''वह प्रातः काल गोबर को हाथ–मुँह धुलाकर और बच्चे को उसे सौंपकर, घास छीलने निकल जाती है और तीसरे पहर तक भूखी प्यासी घास छीलती रहती। फिर उसे मंडी में ले जाकर बेचती और शाम को घर आती।... बच्चा अपने पैरों पर खड़ा होकर जैसे तालियाँ बजा–बजाकर खुश होता है, उसी का वह अनुभव कर रही थी। मानो उसके प्राणों में आनंद का कोई सोता खुल गया हो।'' [15]

शोध–प्रयोजन

जीवन सुख–दुःख और मान–अपमान का समन्वय है। जीव में परिस्थिति के अनुकूल जीवन जीने की पात्रता होनी चाहिए। जीव को यह सीख साहित्य से ही मिलती है। 'गोदान' में प्रेमचंद जी ने झुनिया नारी–पात्र का सृजन कर, आधुनिक नारियों को खासकर विधवा और पुनर्विवाह के संदर्भ में यही संदेश देने का काम किया है।

उपसंहार

'गोदान' उपन्यास में प्रेमचंद जी ने झुनिया के चरित्र निर्माण में पूरी ईमानदारी का परिचय दिया है। यही कारण है कि पाठक उसके सर्वांगीण व्यक्तित्व से परिचित हो पाता है। प्रेमचंद की ईमानदारी का ही परिणाम है कि झुनिया के व्यक्तित्व का विकास उत्पन्न परिस्थिति के अनुकूल होता है। कभी वह प्रेमालाप करती है, तो कभी उग्र हो जाती है, कभी वह कर्त्तव्य पथ पर अडिग रहती है, तो कभी वह झगड़ जाती है।

संदर्भ

1. गोदान– एक नव्य परिबोध त्रिलोकनाथ खन्ना– पृ0–106
2. गोदान की मनोभूमि, डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव, पृ0–123
3. प्रेमचंद और उनका गोदान, डॉ. श्रीमती शैल रस्तोगा, पृ0–19
4. 'गोदान' प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद–1980, पृ0–23
5. वही, पृ0–41
6. वही, पृ0–42
7. वही, पृ0–42, 43
8. वही, पृ0–151
9. वही, पृ0–103
10. वही, पृ0–129
11. वही, पृ0–190
12. वही, पृ0–129
13. वही, पृ0–112
14. वही, पृ0–174
15. वही, पृ0–237
16. वही, पृ0–105 एवं 106